AH-II/Sanskrit-202 C-4/19

B.A. 2nd Semester (Honours) Examination, 2019

SANSKRIT

Paper : 202C-4

[Classical Sanskrit Literature (Drama)]

Course ID : 20912

Time: 2 Hours **Full Marks: 40**

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

Group – A

1. निम्नोक्तप्रश्नेषु यस्य कस्यचिद् *एकस्य* प्रश्नस्योत्तरं दीयताम्। 10×1=10

(क) शाकुन्तले दुष्यन्तचरित्रं पर्यालोच्यताम्।

(ख) कण्वस्य चरितम् आलोच्यताम्।

(ग) स्वप्नवासवदत्तमिति नाटके ब्रह्मचारिवृत्तं सप्रयोजनं व्याख्यायताम्।

2. यथेच्छम् *एकस्य* श्लोकस्य संस्कृतभाषया देवनागरीलिप्या व्याख्या सप्रसङ्गं कार्य्या। 5×1=5

(क) *आपरितोषाद्* विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि *शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं* चेत:।।

(ख) यो हनिष्यति वध्यं त्वां रक्ष्यं रक्षिष्यति द्विजम्।
हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यप:।।

3. ययो: कयोश्चिद् *एकस्य* श्लोकस्य सप्रसङ्गं संस्कृतभाषया देवनागरीलिप्या व्याख्या कार्य्या। 5×1=5

(क) पद्मावती नरपतेर्महिषी *भवित्री*
दृष्टा विपत्तिरथ यै: प्रथमं प्रदिष्टा।।
तत्प्रत्ययात् कृतमिदं न हि *सिद्धवाक्या-*
-न्युत्क्रम्य गच्छति विधि: *सुपरीक्षितानि*।।

(ख) सुखमर्थो भवेद्दातुं सुखं प्राणा: सुखं तप:।
सुखमन्यद् भवेत्सर्वं दु:खं न्यासस्य रक्षणम्।।

4. देवनागरी लिपिमाश्रित्य संस्कृतभाषया *एकस्य* भावसम्प्रसारणं कार्यम्। 5×1=5

(क) न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।

(ख) प्रायेण हि नरेन्द्रश्री: *सोत्साहैरेव* भुज्यते।

5. यछेच्छं पञ्चानां प्रश्नानाम् उत्तरं संस्कृतभाषया देवनागरीलिप्या च लेख्यम्। 5×1=5

(क) *आपरितोषाद्* (२.क) इत्यस्य सकारणविभक्तिनिर्णय: कार्य:।

(ख) अप्रत्ययम् (२.ख)इत्यस्य सविग्रहसमासनाम लेख्यम्।

(ग) अप: (२.ख.)इत्यस्य कारकविभक्तिनिर्णय: कार्य:।

(घ) 'भवित्री (३.क.) इत्यस्य व्युत्पत्ति: का?

(ङ) 'सुपरीक्षितानि' इति पदस्य व्युत्पत्तिनिर्णय: कार्य्य:।

(च) 'सिद्धवाक्यन्युत्क्रम्य' (३.क.) इत्यत्र सन्धिविच्छेद: कर्तव्य:।

(छ) 'सोत्साहै:' (४.ख.) इत्यस्य सविग्रहसमासनाम लेख्यम्।

6. *पञ्च* लघुप्रश्ना: समाधेया:। *द्वयो:* प्रश्नयो: उत्तरं संस्कृतभाषया देवनागरलिप्या अवश्यमेव लेख्यम्। 5×2=10

(क) अभिज्ञानशकुन्तलमिति नाटकस्य भरतवाक्यं लिखत।

(ख) का वासवदत्ता? वासवदत्ताया मातुर्नाम किम्?

(ग) 'पुष्पराशाविवाग्नि:' तुलाराशविवाग्नि:' इत्यनयो: पाठ्यो: क: श्रेयान् कथञ्च।

(घ) 'तस्सिं साहीणीपाया सउन्दला भविस्सदि' इति चरणस्य संस्कृतरूपं लेख्यम्।

(ङ) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव तामघ संप्रेष्य परिग्रहीतु:।
जातो ममायं विशद: प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा'
इति श्लोकस्य सलक्षणं कार्यम् अलंकारनिरूपणम्।

(च) पौरव, रक्ष विनयम्। मदनसन्तप्तापि न खल्वात्मन: प्रभवामि। इत्यस्य प्राकृतं रूपं लेखनीयम्।

(छ) धन्या सा स्त्री यां तथा वेत्ति भर्ता — वाक्यमिदं क: कम् उद्दिश्य उक्तवान्?